अद्वैत-वेदान्त का प्रास्थानिक विकास

त्रिपुरारि कुमार ठाकुर

कूट शब्द- प्रस्थान, विवरण, भामती, वार्तिक, वाद, प्रकरण

शोध सारांश- प्रस्तुत शोध निबन्ध में प्रधानतया अद्वैतवेदान्त के प्रास्थानिक विकास को स्तम्भित किया गया है। जिसमें प्रस्थानिक आचार्यों, उनके ग्रन्थों तथा उन पर लिखित टीका का परम्परानुशीलन उनके नामाल्लेख पूर्वक किया गया है। प्रस्थानों या आचार्यो के सिद्धान्तों को विस्तार भिया यहाँ न ही उल्लेख किया गया है और न ही तुलना। संक्षेपत: आवश्यक स्थलों पर सिद्धान्तों का दिग्दर्शन मात्र किया गया है।

अर्थत: और सिद्धान्तत: वेद-सम्बद्ध विचारों का सुव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करने के कारण उपनिषद् को वेदान्त कहा गया है। यद्यपि कालान्तर में वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिषदों के व्याख्यान के लिए होने लगा तथा औपनिषदिक् भर्तृप्रपञ्च, ब्रह्मानन्दगिरि, द्रविडाचार्य प्रभृति मनीषियों को वेदान्ती कहा जाने लगा।

उपनिषद् के सिद्धान्तों में आपातत: विरोधों के परिहार तथा वाक्यैकता के उद्देश्य से बादरायण व्यास ने ब्रह्मसूत्र की रचना की एवं ब्रह्मसूत्र उपनिषद्मूलक होने के कारण 'वेदान्त-सूत्र' नाम से प्रसिद्ध हुआ। कालचक्र के अनुरूप ब्रह्मसूत्र को लक्ष्य-दृष्टि में रखकर स्व-साम्प्रदायिक सिद्धान्तवर्धन के लिए परस्पर विरोध को उभारकर अनेक भाष्यों, वृत्तियों तथा टीकाओं की रचना हुई। इस सन्दर्भ में ब्रह्मसूत्र पर प्रथित कतिपय भाष्यों का निदर्शन अग्राङ्कित है-

क्र०	व्यक्तिनाम	काल	भाषित भाष्य	सम्प्रदाय
1.	शङ्कर	788-820 ई०	शारीरक भाष्य	निर्विशेषाद्वैतवाद
2.	भास्कर	850 ई०	भास्करभाष्य	भेदाभेदवाद
3.	रामानुज	1040 ई०	श्रीभाष्य	विशिष्टाद्वैतवाद
4.	मध्वाचार्य	1238 ई०	पूर्णप्रज्ञभाष्य	द्वैतवाद
45.	निम्बार्क	1250 ई०	वेदान्तपरिजातभाष्य	द्वैताद्वैतवाद
6.	श्रीकण्ठ	1270 ई०	शैवभाष्य	शैवविशिष्टाद्वैतवाद
7.	श्रीपति	1400 ई०	श्रीकरभाष्य	वीरशैववाद
8.	वल्लभाचार्य	1544 ई०	अणुभाष्य	शुद्धाद्वैतवाद
9.	विज्ञानभिक्षु	1600 ई०	विज्ञानामृतभाष्य	अविभागाद्वैतवाद
10.	बलदेव विद्याभूषण	1725 ई०	गोविन्दभाष्य	अचिन्त्यभेदाभेदवाद

अन्य दार्शनिक सम्प्रदायों के भाँति ही वेदान्त दर्शन का प्रभदेक विविधविचित्ररचना सम्पन्न इस जगत् के मूलान्वेषण में आरम्भवाद, सङ्घातवाद, परिणामवाद, विवर्तवाद इत्यादि तत्त्व हैं। शङ्कर के शारीरक भाष्य पर वाचस्पति मिश्र की ''भामती'' के नाम से **''भामती-प्रस्थान''**, पद्मपाद की पञ्चपादिका-टीका के व्याख्याकार प्रकाशात्मनयति का "पञ्चपादिका विवरण टीका" के नाम से **"विवरण-प्रस्थान"**, ब्रह्मसिद्धि की परम्परा से **''वार्तिक-प्रस्थान''** तथा खण्डन-विधि द्वारा अद्वैत-स्थापन से **''वाद-प्रस्थान''** का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त **''प्रारम्भिक-प्रस्थान''** भी माना जाता है, जिसमें ''प्रकरण-ग्रन्थ'' की रचना हुई।

अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त, विकास तथा अध्ययन सौविध्यदृष्ट्या इसको अधोलिखित रूप में विभाजन कर रेखाङ्कित कर सकते हैं:-

अद्वैत वेदान्त

शङ्कर-पूर्व-अद्वैत-वेदान्त

- उपवर्ष
- भर्तृप्रपञ्च
- भर्तृमित्र
- ब्रह्मदत्त
- गौडपाद

शङ्कर-प्रतिपादित अद्वैत-वेदान्त

- **आचार्य शङ्कर**

शङ्करोत्तर-अद्वैत वेदान्त

अधिकरण-प्रस्थान

विवरण-प्रस्थान

- शङ्कर – शारीरकभाष्य
- पद्मपाद – पञ्चपादिका
- प्रकाशात्मनयति – विवरण
- स्वामी अमलानन्द– पञ्चपादिकाविवरण
- नृसिंहाश्रम–वेदान्तरत्नकोष
- आत्वस्वरूप– प्रबोधपरिशोधनी
- विज्ञानात्म– तात्पर्यद्योतनी
- सर्वज्ञ विष्णुभट्ट– ऋजुविवरण
- चित्सुखाचार्य– तात्पर्यदीपिका

भामती-प्रस्थान

- शङ्कर – शारीरकभाष्य
- वाचस्पतिमिश्र – भामती
- अमलानन्द सरस्वती–वेदान्त कल्पतरु
- लक्ष्मीनृसिंह– आभोग
- अप्पयदीक्षित – परिमल
- अखण्डानुभूति – ऋजुप्रकाशिका
- अच्युतकृष्णतीर्थ– भामतीभावदीपिका
- वल्लालसूरी – भामतीतिलक

वार्तिक-प्रस्थान

- सुरेश्वराचार्य –बृहदारण्यकोपनिषद्–भाष्यवार्तिक, पञ्चीकरण वार्तिक, नैष्कर्म्यसिद्धि
- विद्यारण्यस्वामी–वृहदारण्यकवार्तिकसार
- मण्डनमिश्र– ईश्वरसिद्धिः
- सर्वज्ञात्मुनि – संक्षेपशारीरक
- चित्सुख – भावतत्त्वप्रकाशिका
- विद्यासुरभि– ज्ञानामृत
- अखिलात्मा – नैष्कर्म्यसिद्धिविवरण

वाद-प्रस्थान/बाध-प्रस्थान

- श्रीहर्ष– खण्डनखण्डखाद्य
- चित्सुख– तत्त्वप्रदीपिका
- मधुसूदनसरस्वती–अद्वैतसिद्धि
- आनन्द–बोध– न्यायमकरन्द
- अप्पयदीक्षित– मध्वमुखमर्दन, रामानुजाशृङ्गभृङ्ग

शङ्कर-पूर्व-वेदान्त

प्राचीन वेदान्त अर्थात् शङ्करपूर्व वेदान्त की सृदढ़ परम्परा दृष्टिगत होती है। जैन दार्शनिक समन्तभद्र जो शंकरपूर्व थे, वे अपने ग्रन्थ आप्तमीमांसा में अद्वैतवाद का उल्लेख करते हैं।[1] बौद्ध दार्शनिक कमलशील ने भी तत्त्वसंग्रह की टीका में 'अद्वैतदर्शनावल्मिनश्च औपनिषदिका:'' कहकर अद्वैत-वेदान्त का उल्लेख किया है।

बादरायण ने ब्रह्मसूत्र में बादरायण, आत्रेय, आश्मरथ्य, औडुलोमि, बादरि, जैमिनी, कार्ष्णाजनि और काशकृत्स्न इन आठ वेदान्तियों का उल्लेख उनके नाम से किया है। कदाचित् इनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने ब्रह्मसूत्र लिखे थे। किन्तु बादरायण के ब्रह्मसूत्र को छोड़कर अन्य अनुपलब्ध ही है। स्वयं शंकराचार्य ने अपने पूर्ववर्ती वेदान्तियों में सुन्दर पाण्ड्य, द्रविडाचार्य, उपवर्ष, भर्तृप्रपञ्च, गौडपाद तथा ब्रह्मदत्त के मतों का उद्धरण दिया है एवं मण्डन मिश्र उनके वरिष्ठ समकालीन माने जाते हैं।

उपवर्ष वृत्तिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके वृत्ति का कुछ अंश मीमांसा-भाष्यकार शबर ने 1.1.5 के सूत्र-भाष्य में वृत्तिकार-ग्रन्थ के रूप में उद्धृत किया है। शंकराचार्य ने उन्हें स्फोटवाद के विरोधी और वर्णवाद का समर्थक माना है।

भर्तृप्रपञ्च- यह एक प्रख्यात वेदान्ती थे। सम्भवत: उन्होंने बृहदारण्यकोपनिषद् पर भाष्य लिखा था जो सम्प्रति अनुपलब्ध है। शंकर, सुरेश्वर और आनन्द गिरि ने क्रमश: बृहदारण्यकोपनिषद् के भाष्य, वार्तिक और टीका में इनके मतों का उल्लेख तथा खण्डन किया है। भर्तृप्रपञ्ज सत् की आठ अवस्थाओं को मानते थे।

1. अन्तर्यामी 2. साक्षी 3. अव्याकृत 4. सूत्रात्मा 5. विराट् 6. देवता 7. जाति, और 8. पिण्ड।

भर्तृमित्र ने सम्भवत: बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर एक वृत्ति लिखी थी। मण्डन मिश्र ने ब्रह्मसिद्धि के चतुर्थ काण्ड में उनकी आलोचना की है। कुमारिल भर्तृमित्र को मीमांसा को लोकायतीकृतकर्ता कहा है। शङ्कर के पूर्व **ब्रह्मदत्त** एक वेदान्ती थे जो जीवन्मुक्ति को नहीं मानते थे। इनके मत को भावाद्वैतवाद कहा जाता है। ये प्रपञ्चविलय के समर्थक और नियोगवादी थे जिनका खण्डन शंकर, मण्डन मिश्र तथा सुरेश्वराचार्य ने भी किया है।

गौडपाद-

गौडपाद निर्विवाद रूप से अद्वैतवादी थे। मैक्स वालेसर नामक जर्मन विद्वान के सन्देह को आधुनिक विद्वानों ने सुतरां निराकरण किया है। इनकी रचना माण्डूक्यकारिका या आगमशास्त्र है जिसमें चार प्रकरण है:- (i) आगम (ii) वैतथ्य (iii) अद्वैत, और (iv) अलात्शान्ति। गौडपाद के जिन सिद्धान्तों

---

[1] अद्वैतकान्तपक्षे दृष्टो भेदो विरूध्यते।
कारकाणां क्रिययोशच नैकं स्वस्मात् प्रजायते।। आप्तमीमांसा,

A First EPQRST Journal- www.jahnavisanskritejournal.com , Issue- 18th , Vol – V,. Page-68-78 ISSN 976-8645

का प्रभाव अद्वैतवेदान्त के परवर्ती चिन्तन पर विशेष रूप से पड़ा है उनमें प्रणवोपासना, आत्मवाद, अजातिवाद, मायावाद, अद्वैताविरोधवाद, मोक्षवाद इत्यादि प्रमुख है। इन्होंने सत्कार्यवाद और असत्कार्यवाद दोनों का खण्डन करते हुए अजातिवाद को स्थापित किया है।[2] इनके अनुसार द्वयाभास भी मायिक जिसका कारण मन को माना है।[3]

मण्डनमिश्र- मण्डनमिश्र तथा सुरेश्वर इनकी भिन्नता अथ वा अभिन्नता सर्वसम्मत नहीं है तथापि इनके अद्वैतवादिता सर्वसम्मत है। मण्डनमिश्र के तीन ग्रन्थ अद्वैतवाद सम्बन्धित है- ब्रह्मसिद्धि, स्फोटसिद्धि और विभ्रमविवेक। ब्रह्मसिद्धि पर चित्सुख की अभिप्राय प्रकाशिका, शंखपाणि की ब्रह्मसिद्धि व्याख्या और आनन्दपूर्ण की भावशुद्धि नामक टीकाएं है। ब्रह्मसिद्धि में चार काण्ड है- ब्रह्म, तर्क, नियोग, तथा सिद्धि। मण्डन मिश्र ने विशेष रूप से भेद का निराकरण, प्रत्यक्ष विश्लेषण, मोक्षवाद, प्रपञ्चविलयवाद को स्थापित किया है।

मण्डन मिश्र ने ब्रह्मसिद्धि के तर्क काण्ड में सिद्ध किया है कि 'भेद न तो प्रत्यक्षगोचर है और न अनुमान गम्य। वह न तो उपमान से जाना जाता है और न अर्थापत्ति से''।[4] तत्त्वत: वह किसी वस्तु का गुण भी नहीं है। भेद अभाव भी नहीं है क्योंकि बिना आश्रय के अभाव की प्रतीति नहीं होती है।

आचार्य शङ्कर

9वीं शताब्दी में केरल के कालडीनामक ग्राम में नम्बूदरीपाद ब्राह्मण कुल में एक ऐसी विलक्षण प्रतिभा का आविर्भाव हुआ जिसने आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों का अध्ययन, बारह वर्ष की आयु में सर्ववित् सर्वज्ञ तथा सोलह वर्ष की उम्र में बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर शारीरक भाष्य लिखा। 32 वर्ष की अवस्था में अपनी इहलीला का पटाक्षेप करने वाले महान् दार्शनिक आचार्य शङ्कर को ईश्वर का एक विशेष अवतार समझ लेना सहज स्वाभाविक है। माधव का शङ्करदिग्विजय और आनन्दगिरि का शंकरविजय इनके जीवन-चरित्र के प्रकाशक ग्रन्थ हैं। किन्तु इन सभी ग्रन्थों में ऐतिहासिक सामग्री और प्रशंशात्मक काव्य का इतना मिश्रण है कि शंकर का प्रामाणिक जीवनी लिखना एक समस्या हो गयी है।

संगठन-शक्ति से बढ़कर चिन्तन-शक्ति और लेखन शक्ति के पुरोधा शंकर प्रथित अनेक ग्रन्थ प्रचलित है, तथापि प्रामाणिक रूप से शारीरकभाष्य, दश उपनिषद् भाष्य, भगवद्गीता-भाष्य तथा उपदेशसाहस्त्री (केवल पद्यात्मक अंश) ही प्राय: मान्य है। आचार्य शङ्कर की समग्र रचनासृष्टि को

---

2 भूतं न जायते किञ्चिद् अभूतं नैव जायते।
विवदन्त्यो द्वया ध्येवमजातिं ख्यापर्यात ते,, मा. उ. की. 4/14

3 यथा स्वप्ने द्वयामासं स्पन्दते मायया मन:।
तथा जाग्रद् द्वयाभासं स्पन्दते मायया मन।। (मा.का.-3/28)

4 ''न भेदों वस्तुनो रूपं तद्भाव प्रसङ्गत:
अरूपेण च भिन्नत्वं वस्तुनो नावकल्पते।। ब्र.सि. 2.5

तीन खण्डों में विभक्त कर सकते हैं। भाष्य, स्तोत्र और प्रकीर्ण ग्रन्थसमूह विवेकचूड़ामणि, दशश्लोकी, दृग्दृश्यविवेक, अपरोक्षानुभूति, सौन्दर्यलहरी, दक्षिणामूर्तिस्तोत्र, कनकधारा, योगतारावली, आत्मबोध, पञ्चीकरण इत्यादि ग्रन्थ भी शंकर प्रणीत माने जाते हैं, लेकिन सम्भवतः ये ग्रन्थ उन जगद्गुरू शंकराचार्य की रचना है जो आदि शंकर द्वारा स्थापित मढ़ों में मठाधीश थे।

शंकर के चार प्रमुख शिष्यों में पद्मपाद, सुरेश्वर, त्रोटक और हस्तामलक माने जाते हैं। हस्तामलक के नाम से केवल उनका हस्तामलक स्तोत्र प्रसिद्ध है जिसमें 14 श्लोक हैं। इन पर शंकर की एक टीका भी है। इसमें गुरू-शिष्य संवाद के माध्यम से अद्वैत वेदान्त की स्थापना गयी है।[5] आचार्य त्रोटक या तोटक के नाम से श्रुतिसारसमुद्धरण प्रसिद्ध है, जिसमें 197 पद्य त्रोटक छन्द में बद्ध है। इस पर सच्चिदानन्द योगिन्द्र की तत्त्वदीपिका व्याख्या नामक तोटक वृत्ति है।

आचार्य शङ्कर प्रणीत शारीरक भाष्य पर अनेक टीकाएँ लिखी गयी हैं जिनमें शङ्कर प्रवर्द्धित निर्गुण ब्रह्मवाद, आत्मवाद, मायावाद, सृष्टि-विद्या, ईश्वर और जीव, मोक्ष तथा मोक्षमार्ग सदृश सिद्धान्तों को ही प्रपुष्टित किया गया है। शारीरक भाष्य पर प्रमुख टीका-

	टीका		**लेखक**
1.	पञ्चपादिका	1.	पद्मपाद (केवल प्रथम चर सूत्र पर)
2.	भामती	2.	वचस्पतिमिश्र
3.	संक्षेपशारीरक	3.	सर्वक्षात्ममुनि (पद्य)
4.	न्यानिर्णय	4.	आनन्दगिरि
5.	रत्नप्रभा	5.	गोविन्दानन्द
6.	भाष्यभाव-प्रकाशिका	6.	चित्सुखाचार्य
7.	शारीरकन्यायरक्षामणि	7.	अप्पयदीक्षित
8.	ब्रह्मविद्याभरण	8.	अद्वेतानन्द। इत्यादि।

इन सभी भाष्य ग्रन्थों में प्रमुखतया आचार्य शंकर की लक्ष्यदृष्टि को ही लक्षित किया गया है।[6]

विवरण-प्रस्थान- आचार्य पद्मपाद शंकराचर्य के साक्षात् और अन्यतम शिष्य थे। इनका पूर्वनाम सनन्दन और इनका जन्म दक्षिण के चोल देश में हुआ था। ''भारतीय दर्शन के इतिहास'' में डॉ. सुरेन्द्रनाथ दास गुप्त ने इनको शंकर का समकालीन माना हैं। शंकराचार्य के ब्रह्मलीन के बाद

---

5 नाहं मनुष्यो न देवयक्षौ, न ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्यशुद्राः।
न ब्रह्मचरी न गृही वनस्थो, भिक्षुश्च नांह निजबोधरूपः।। हस्ताम. 13

6 ''वेदान्तवाक्यकुसुमग्रथनत्वात्सूत्राणाम्। वेदान्त वाक्यानि हि सूत्रैरूहाद्वत्य वियार्यन्ते। वाक्यार्थ विचारणाध्यवसान-निर्वृत्ता हि ब्रह्मावगति''- शा.भा. -1.1.2
अस्य जगतो नामरूपाभ्यां व्याकृतस्य अनेककर्तृभोक्तृसंयुक्तस्य प्रतिनियतदेशकालनिमित्तक्रियाफलाश्रयस्य मनसा अपि अचिन्त्यरचनारूपस्य जन्मस्थितिभंङ्गं यतः सर्वज्ञात् सर्वशक्तेः कारणाद् भवति, तद् ब्रह्मैवेति। -शा.भा.-1.1.2

आचार्य पद्मापाद गोवर्धन मठ पुरी के शंकराचार्य पद पर अभिषिक्त हुए थे। शंकराचार्य के निर्देशानुसार पद्मपाद ने उनके शारीरकभाष्य पर 'पञ्चपादिका' नामक टीका लिखी थी। वर्तमान में यह ग्रन्थ केवल चतु: सूत्री तक ही प्राप्त होता है लेकिन शङ्करदिग्विजय के अनुसार इसका शेष भाग भी था, जिसे 'वृत्ति' कहा जाता था।[7]

शंकरदिग्विजय में वर्णित कथा के अनुसार पञ्चपादिका का नाम 'वेदान्तडिण्डिम' था। इस ग्रन्थ में पद्मपाद ने शांकरभाष्य के तात्पर्य का तार्किक और अभूतपूर्व विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ के उपर आचार्य प्रकाशात्मनयति की "विवरण टीका" है, जिसके नाम से 'विवरण-प्रस्थान' प्रसिद्ध हुआ। पञ्चपादिका पर विवरण के अतिरिक्त पञ्चपादिका-दर्पण स्वामी अमलानन्द की, वेदान्तरत्नकोष नृसिंहाश्रम की, प्रबोधपरिशोधिनी आत्मस्वरूप की तथा तात्पर्यद्योतनी, विज्ञानात्मा की टीका उपलब्ध है। पद्मपाद के अन्यग्रन्थों में शंकराचार्यकृत प्रपञ्चसारतन्त्र पर विवरण नामक टीका, शिवपञ्चाक्षरीभाष्य तथा विज्ञान दीपिका है। 'विवरण-प्रस्थान' को 'टीका-प्रस्थान' भी कहा जाता है क्योंकि 'पञ्चपादिका' शारीरकभाष्य की एक टीका है। विवरण टीका परवर्ती काल में इतनी प्रख्यात हुई कि इसके उपर भी अनेक उपटीकाएँ लिखी गई जिनमें ऋजुविवरण सर्वज्ञविष्णुभट्ट की, तत्त्वदीपन अखण्डानन्द की, तात्पर्यदीपिका चित्सुखाचार्य की तथा भावप्रकाशिका नृसिंहाश्रम की प्रमुख है। इन ग्रन्थों से सुसज्जित विवरण-प्रस्थान एक सुप्रतिष्ठित प्रस्थान बन गया है। विवरण टीका के बिना पंचपादिक की संक्षिप्त और सार गर्भित उक्तियों को हृदयंगम करना कठिन है। "पञ्चपादिका" में जो वेदान्त-सिद्धान्त बीजत्वेन वर्णित है, वही "विवरण" में बहुशाखामय, सुदृढ़ एवं विशाल वृक्षत्वेन विकसित हुआ है।

पञ्चपादिका नौ वर्णकों में विभक्त है। वर्णक का अर्थ वर्णन या व्याख्या से है जिसमें प्रत्येक वर्णक में एक-एक दार्शनिक विषय की व्याख्या की गयी है। विवरण प्रस्थान के आचार्यों ने प्रमुख रूप से अध्यास, तमस-भावरूपत्व, अविद्या का स्वरूप तथा भावरूपत्व, ब्रह्म का स्वरूप और लक्षण, ब्रह्म की जगत्कारणता, जीव का स्वरूप, जगन्मिथ्या शब्दापरोक्षवाद और अविद्या निवृत्ति को ही उद्भाषित किया है।

भामती-प्रस्थान- भामती प्रस्थान के उद्भावक आचार्य के रूप में वाचस्पति मिश्र माने जाते हैं, जिन्होंने शारीरक भाष्य पर एक विशद और मौलिक टीका के रूप में 'भामती' की रचना की है। ये

---

7 "यत्पूर्वभाग: किल पञ्चपादिका तच्छेषा वृत्तिरिति प्रथीयसी" श.दि. 70-71

दशवीं शताब्दी के श्रेष्ठ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र दार्शनिक के रूप में प्रख्यात हैं। कल्पतरूकर के नाम से प्रख्यात अमलानन्द सरस्वती ने भामती पर वेदान्त कल्पतरु नामक टीका लिखी है जिसने भावती-प्रस्थान को अद्वैत-वेदान्त के प्रतिष्ठित प्रस्थान के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की है। अमलानन्द सरस्वती भामती प्रस्यान के संस्थापक आचार्य माने जाते हैं। अमलानन्द के वेदान्तकल्पतरू पर अप्पयदीक्षितकृत परिमल, लक्ष्मीनृसिंहकृत आभोग, वैद्यनाथ पायुगुण्डेकृत मञ्जरी प्रसिद्ध है। वेदान्तकल्पतरू के अतिरिक्त भामती पर वल्लालसूरीकृत भामती तिलक, अखण्डानुभूति यतिकृत ऋजुप्रकाशिका, अच्युतकृष्णतीर्थकृत भामती-भावदीपिका, सुब्रह्मण्यशास्त्रीकृत भामती-विवरण इत्यादि प्रमुख टीका है। वाचस्पति मिश्र ने पद्मपाद की पञ्चपादिका और शंकर के सिद्धान्तों का कहीं-कहीं विरोध प्रकट करते जिनका स्वरूप और पुष्ट अमलनान्द ने किया है। शंकर के अनुसार स्वशक्ति से ब्रह्म जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादन कारण है किन्तु वाचस्पति मिश्र ने माना कि जगत् की कारण ब्रह्म है तथा वह जीव के भ्रम का विषय है।[8]

भामती प्रस्थान का मुख्य भेद विवरण प्रस्थान से है। इन दोनों प्रस्थानों में प्राय: निम्न भेद किये जाते हैं:-

	भामती-प्रस्थान		**विवरण-प्रस्थान**
1.	श्रवण में कोई विधि नहीं है।	1.	श्रवण में नियम-विधि है।
2.	जीवाश्रित अविद्या का विषय ब्रह्म-जगत् का कारण है।	2.	ईश्वर जगत् का कारण है।
3.	जीव ब्रह्म का अवच्छेद है।	3.	जीव ईश्वर का प्रतिबिम्ब है।
4.	अविद्या का आश्रय जीव तथा विषय ब्रह्म है।	4.	अविद्या का आश्रय और विषय दोनों ब्रह्म है।
5.	मन एक इन्द्रिय है।	5.	मन इन्द्रिय नहीं है।
6.	श्रवण, मनन और निदिध्या-सन से संस्कृत मन से आत्म-साक्षात्कार होता है। शब्द से केवल परोक्ष ज्ञान होता है।	6.	महावाक्य से आत्मसाक्षात्कार होता है। शब्द से अपरोक्ष ज्ञान होता है। यह मत शब्दपरोक्षवाद है।
7.	अविद्या अनेक है। वह प्रति	7.	अविद्या एक है।

8 स्वशक्त्या नटवट ब्रह्मकारणं शङ्करोऽब्रवीत।
जीवभ्रान्तिनिर्मितं तद् बसासे भामतीपति।। कल्पतरु-पृ.-471

A First EPQRST Journal- www.jahnavisanskritejournal.com , Issue- 18th , Vol – V,. Page-68-78 ISSN 976-8645

	जीव भिन्न है।		
8.	जीव अनेक है।	8.	जीव एक है।
9.	ईश्वर अनेक है।	9.	ईश्वर एक है। वह बिम्बभूत है।
10.	ईश्वर कल्पित है	10.	ईश्वर परम सत् है।
11.	याग आदि कर्म विविदिषा के साधन है, ज्ञान के नहीं।	11.	याग आदि कर्म ज्ञान के साधन है।
12.	संन्यास में ज्ञान की अंगता अदृष्ट के द्वारा है।	12.	संन्यास में ज्ञान की अंगता दृष्ट के द्वारा है।
13.	दृष्टि-सृष्टिवाद द्वारा जगत् की व्याख्या की जाती है।	13.	सृष्टिदृष्टिवाद द्वारा जगत् की व्याख्या की जाती है।
14.	त्रिवृत्करण प्रक्रिया मान्य है।	14.	पंचीकरण प्रक्रिया मान्य है।
15.	सभी श्रुतियाँ प्रत्यक्ष से बलवान् नहीं है किन्तु तात्पर्यवती श्रुति प्रत्यक्ष से बलवान् है। जो अन्य जो अन्य श्रुतियाँ वे अर्थवाद मात्र हैं।	15.	तात्पर्यवती श्रुतियाँ भी प्रत्यक्ष से से बलवान् नहीं है। उनका अर्थ लक्षणा द्वारा ही किया जाता है।

वार्तिक प्रस्थान- इस प्रस्थान के संस्थापक शंकराचार्य के साक्षात् शिष्य सुरेश्वराचार्य हैं और इसका आधार ग्रन्थ बृहदारण्यकोपभाष्यवार्तिक है जिस पर आनन्दगिरि तथा विद्यारण्य स्वामी की टीका है। सुरेश्वराचार्य के अन्य ग्रन्थ भी इस प्रस्थान में आते हैं जिनमें पञ्चीकरणवार्तिक, नैष्कर्म्यसिद्धि, मानसोल्लास प्रमुख है। नैष्कर्म्यसिद्धि आचर्य सुरेश्वर की मौलिककृति है जिन पर ज्ञानोत्तमाकृत चन्द्रिका, चित्सुख की भावतत्त्वप्रकाशिका, ज्ञानामृत की विद्यासुरभि, अखिलात्मा की नैष्कर्म्यसिद्धि विवरण तथा रामदत्तकृत सारार्थ प्रमुख है। वार्तिक प्रस्थान का एक अन्य प्रधान ग्रन्थ सर्वज्ञात्मुनि रचित संक्षेपशारीरक है। जिसको शारीरकभाष्यवार्तिक भी महा जाता है। इस पद्यमय ग्रन्थ पर मधुसूदन सरस्वतीकृत संक्षेपशारीरकसार संग्रह, नृसिंहाश्रमकृत तत्त्वबोधनी, विश्ववेदकृत सिद्धान्तदीप, रामतीर्थकृत अन्वर्थप्रकाशिका इत्यादि प्रमुख है।

आचार्य सुरेश्वर का अद्वैतविषयक सिद्धान्त शंकर के सिद्धान्तों को एक ओर पुष्ट भी करता है तथा अनेकत्र स्थलों पर वैषम्य भी स्थापित करता है। औपाधिक भेद व्यवस्था में जहाँ पद्मपाद प्रतिबिम्बवाद का समर्थन करते हैं, वाचस्पतिमिश्र अवच्छेदवाद को पुष्ट करते हैं वहीं सुरेश्वराचार्य आभासवाद के प्रमुख समर्थक है।[9]

भामती प्रस्थान में त्रिवृतकरण की मान्यता है जबकि वार्तिक प्रस्थान में पञ्चीकरण मान्य है। नैष्कर्म्यसिद्धि में सुरेश्वराचार्य ने कर्मफल चार प्रकार के बताये है:- (i) उत्पाद्य (ii) संस्कार्य (iii) विकार्य (iv) आप्य।[10]

वाद-प्रस्थान- भामती-प्रस्थान, विवरण प्रस्थान तथा वार्तिक-प्रस्थान को मिलाकर अधिकरण प्रस्थान कहा जाता है,

---

9 आभिमुख्येन अहम् इत्यपरोक्षेण भासते इत्याभासः।
प्रत्यक् चितोऽवमतो भासो नाम आभासः।। बृ. भा. वार्ति.-2.1.216

10 उत्पाद्यमाप्यं संस्कार्यं विकार्यं च क्रियाफलम्।
नैवं मुक्तिर्यतस्तस्मात् कर्म तस्या न साधकम्। नै.सि.-1/153

क्योंकि इनमें मुख्यत: अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों को व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। इसके विपरीत वाद-प्रस्थान में जहाँ एक और अद्वैतवाद के सभी पूर्ववर्ती प्रस्थानों का समन्वय किया गया है वहीं दूसरी और बाध नियम के बल पर परमत खण्डन भी किया गया है, अत: इस प्रस्थान को बाध-प्रस्थान भी कहा जाता है। इस प्रस्थान के मुख्य ग्रन्थ श्रीहर्ष का खण्डनखण्डखाद्य, चित्सुख की तत्त्वप्रदीपिका, और मधुसूदन सरस्वती की अद्वैतसिद्धि है जिसे भाषा, शैली और विचार की दृष्टि से कठिन होने के कारण 'कठिनत्रयी' भी कहा जाता है। इन प्रास्थानिक ग्रन्थों पर नव्यन्याय-भाषा-शैली का प्रभाव होने के कारण इसे नव्य-वेदान्त भी कहा जाता है।

खण्डनखण्डखाद्य की दार्शनिकता की यशोगाथा उन पर लिखित टीका से ही विदित होता है जिनमें परमानन्द कृत खण्डन-मण्डन, भवानाथकृत खण्डन-मण्डन, रधुनाथ शिरोमणिकृत दीधित, वर्धमानकृत-प्रकाश, विधाभरणकृत विद्याभरणी, शंकरमिश्रकृत आनन्दवर्धन (शांकरी), पद्मनामकृत शिष्यहितैषणी, चित्सुख की भावदीपिका, रधुनाथभट्टाचार्यकृत खण्डनभूषणमरिग इत्यादि प्रमुख है। खण्डनखण्डखाद्य पर उपलब्ध सभी टीकाओं को मुख्यतया त्रिधा विभक्त कर सकते हैं जिनमें -(i) खण्डनखण्डखाद्य का खण्डन कर न्यायदर्शन का मण्डन (ii) खण्डनखण्डखाद्य के युक्तियों का विकास (iii) न्यायदर्शन का अद्वैतवेदान्त की ओर विकास।

उक्त आचार्यों तथा उनके टीकाकारों के अतिरिक्त भी इस प्रस्थान के अन्तर्गत अनेक आचार्यों ने योगदान दिया है। तद्यथा:-

आनन्दबोधकृत न्यायमकरन्द, अप्पयदीक्षितकृत मध्वमुखमदर्न तथा रामानुज श्रृङ्गभृङ्ग,

नृसिंहाश्रमकृत- भेदधिक्कार, अन्तकृष्णशास्त्रीकृत शतभूषणी इत्यादि।

प्रकरण/प्रारम्भिक-प्रस्थान– तुलसीदास ने अद्वैत वेदान्त के विषय में कहा है कि ज्ञानमार्ग समझने, साधने और कहने में कठिन है।[11]

इस कठनाई को दूर करने के लिए अनेक अद्वैत वादियों ने सारसंग्रहभूत अनेक प्रकरण या आरम्भिक ग्रन्थ की रचना की, जिनके अध्ययन के अनन्तर शारीरकभाष्य, बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिक, अद्वैतसिद्धि चित्सुखी आदि ग्रन्थों को पढ़ने की परम्परा है। इन प्रकरण ग्रन्थों को प्रयोग की दृष्टि से द्विधा विभक्त कर सकते हैं। (i) मुमुक्षु की दृष्टि से– जिनमें स्वामी विद्यारण्य तथा उनके गुरू भारतीयतीर्थकृत पञ्चदशी तथा महादेव सरस्वतीकृत तत्त्वानुसन्धान है। तथा (ii) जिज्ञासु की दृष्टि से- जिनमें सदानन्द यतिकृत अद्वैत ब्रह्मसिद्धि सदानन्दकृत वेदान्तसार तथा धर्मराजाध्वरीन्द्र कृत वेदान्तपरिभाषा इत्यादि प्रमुख हैं।

उपसंहार-

उक्त विवेचन से सिद्ध है कि अद्वैत-वेदान्त मनीषियों के मध्य एक जीवन्त दर्शन है। उसमें नये-नये आयाम प्रत्येक शताब्दी की आश्वयकतानुसार जुड़ते चले जा रहे हैं। इस दर्शन ने एक प्रकार की तर्क प्रणाली विकसित की जिसे अद्वैत द्वन्द्वन्याय (खण्ड-विधि द्वारा अद्वैतवाद का विकास) कहा गया है। अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के सिद्धान्तों का खण्डन व मण्डन उत वा पूर्ववर्ती आचार्यों के सिद्धान्तों का स्वमतिक मण्डन ही प्रस्थानों के विकास का कारण रहा होगा। इन प्रस्थानों के विकास में हमें एक प्रकार की खण्डन-मण्डन वा तर्क की परम्परा का ज्ञान होता है जिसके

---

[11] कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन विवेक।
होत घुनाच्छर न्याय जौं पुनि प्रत्यूह अनेका। -रामचरितमानस, उत्तर काण्ड, 8 (ख)

कसौटी पर ही प्रास्थानिकाचार्यों ने स्वमति को मूर्तिमान किया है। तद्यथा:-

(i) उपनिषदों में यह नेति-नेति की प्रक्रिया तथा इति इति (एतद् वैतत्) की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। अर्थात् इसके दो पक्ष है:- निषेध तथा अभिधान।

(ii) मण्डनमिश्र तथा शङ्कर ने इसमें अध्यारोप और अपवाद की प्रणाली जोड़ी। इससे अध्यारोपों की संख्या भी अनियत हो जाती है और इनके निराकरण की संख्या भी अनियत होती जाती है।

(iii) गौडपाद तथा शङ्कर ने इसमें चतुष्कोटिक तर्कप्रणाली जोड़ी जिसको उनके पूर्व माध्यमिकों ने विकास किया था।

(iv) श्रीहर्ष, चित्सुख और मधुसूदन सरस्वती ने इसमें प्रसंगानुसार की पद्धति जोड़ी और किसी विषय का खण्डन करने के लिए उसके अर्थ को अनेक विकल्प बनाये और यह दिखाया कि कोई भी विकल्प सम्भव नहीं है। विकलपों की संख्या प्रसंगानुसार या अनयित है।

(v) मधुसूदनोत्तर अद्वैतवेदान्तियों ने अन्वय-व्यतिरेकानुमान का भी प्रयोग किया और श्रुति, स्मृति तथा युक्ति से अद्वैतवाद को सिद्ध किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अद्वैत वेदान्त का इतिहास तथा सिद्धान्त- डॉ. राममूर्ति शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1972
2. अद्वैत वेदान्त में तत्त्व और ज्ञान- डॉ. उर्मिला शर्मा, छन्दस्वती प्रतिस्ठान, वाराणसी,-1978
3. वेदान्तदर्शन-पाल डायसन, (अनु.) सङ्गमलाल पाण्डेय, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ 1971
4. वेदान्त दर्शन- उदयवीर शास्त्री, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली 1991
5. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास- (10 वाँ खण्ड), खण्ड-विशेष सम्पादक- सङ्गमलाल पाण्डेय, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1996.